बेफिक्र बादशाही का अनुभव यहीं करें

राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि हमें बेफिक्र बादशाह बनना है। हम लम्बे समय हल्के रहने का अभ्यास करें और याद रखेंगे जो स्वयं बहुत हल्के रहेंगे उनकी बीमारियां भी हल्की हो जायेंगी। अब आगे पढ़ेंगे...

बहुत सुन्दर अनुभव करने की बात है, सिद्धांत है। जो स्वयं सरलचित्त होंगे उनके संस्कार भी सरल हो जायेंगे। जो स्वयं बहुत हल्के रहेंगे, उनकी समस्यायें भी हल्की होती जायेंगी। योग भी हल्का होगा, सहजयोग हो जायेगा। और सम्बन्ध सम्पर्क में भी बहुत हल्कापन आ जायेगा। जो स्वार्थ है भारीपन आ गया है आजकल। तेरा-मेरा बहुत हो गया है, एक-दूसरे के प्रति मान नहीं रहा, प्यार की दृष्टि नहीं रही। वो सब ठीक हो जायेगा। तो हमें बहुत हल्के रहना है।

इस संसार में भी हम ऐसे विचरण करें, हमारी दादी जानकी उदाहरण दिया करती थीं, जैसे शेर जंगल में अकेला रहता है, निर्भिक, कांटों के जंगल में। धूप-गर्मी में, हम भी मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, बेफ्रिक बादशाह हैं, हम भी कलियुग की इस काली रात में निर्भिक होकर विचरण करें। चारों ओर चाहे कांटें हों, समस्याओं के पहाड़ गिर रहे हों, लेकिन हमें साथ देने वाला कौन है? ये बहुत अच्छी तरह से स्मृति में रखेंगे तो मन बहुत पॉवरफुल भी हो जायेगा, मन बहुत हल्का भी रहेगा। मन को भारी करने वाली चीज़ है मैं और मेरा। तो एक हम डबल लाइट होने का अभ्यास करेंगे मैं फरिश्ता हूँ इससे मन स्वतः ही हल्का रहने लगेगा। हमसे चारों ओर लाइट फैलती है। मेरे चारों ओर आभामंडल है। मेरा साथी है लेकिन एक बात पर गहराई से चिंतन किया करेंगे, मैं और मेरा ये दो विशेष फीलिंग मन को भारी करती है। मैंने ये किया, किसी ने उसकी कदर ही नहीं की। मैं ये करना चाहता था लेकिन किसी ने साथ ही नहीं दिया। मुझे करने ही नहीं दिया। मेरी ये-ये शुभ इच्छायें थी किसी ने पूरी नहीं करने दी। मेरी कोई मदद नहीं करता। मैं अकेला हो गया हूँ संसार में। मेरी ये ज़िम्मेदारी है पैसा कम है, मैं अकेला हूँ, मुझे ये-ये बड़े काम करने थे, मैं ये नहीं कर सकता हूँ। मैं और मेरा मन को बोझिल करते हैं। तो भगवान के महावाक्य, मेरे को तेरे में बदलो। फिक्र सब बाप को देकर फखुर ले लो। और बन जाओ बेफिक्र बादशाह। ये तीन बात याद रखेंगे। फिक्र, चिंतायें, बाबा को अर्पित करके फखुर लेना, ईश्वरीय नशा, कौन मुझे साथ दे रहा है? ये संकल्प सदा रखा करें। स्वयं सर्वशक्तिवान मुझे साथ दे रहा है। संसार साथ दे या ना दे, सृष्टि का बीज मुझे साथ दे रहा है। मुझे सबका साथ भी अवश्य मिल जायेगा। और जिसे भगवान साथ दे उसका जीवन तो निर्विघ्न होगा ही। उसे तो सहज सफलता मिलेगी ही। क्योंकि वरदानों का दाता मेरा साथी है। ऐसे सुन्दर संकल्प फखुर के। ईश्वरीय नशे को अपने में क्रियेट करते रहें। और संकल्प करें कि बातें तो आती हैं और जाती हैं। मुझे बहुत हल्का भी रहना है और भगवान की इस आज्ञा को पालन करना है कि मैं बेफिक्र बादशाह बन जाऊं। यहाँ बादशाह बनेंगे तो विश्व की बादशाही तो निश्चित है ही। पर अब हम भगवान की छत्रछाया में आ गये। हम उसके साथी बन गये, वो हमारा साथी बन गया। हम इस बेफिक्र बादशाही का अनुभव यहीं करें। मस्त रहें, निर्विघ्न रहें और बहुत शक्तिशाली बनकर चलें। और डबल लाइट हो जायेंगे।

संकल्प करें कि बातें तो आती हैं और जाती हैं। मुझे बहुत हल्का भी रहना है और भगवान की इस आज्ञा को पालन करना है कि मैं बेफिक्र बादशाह बन जाऊं। यहाँ बादशाह बनेंगे तो विश्व की बादशाही तो निश्चित है ही।

रुड़की-उत्तराखंड। शिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए श्यामवीर सैनी,राज्यमंत्री स्तर, ब्र.कु. रानी,उपक्षेत्रीय संचालिका,सहारनपुर, शोभाराम प्रजापति,भाजपा जिला अध्यक्ष,पूर्व सदस्य,योजना आयोग,दिनेश मधुकर, नगर निगम सदस्य सचिन कश्यप, रिटायर्ड अधीक्षण अभियंता श्री वाईएन गोयल, ब्र.कु. लक्ष्मी चंद, डॉ. अमित तंवर तथा अन्य।

कैथल-हरियाणा। शिव जयंती कार्यक्रम में आमंत्रित भाजपा जिला परिषद मुनीष कठवाड़ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी। साथ हैं अमरपाल राणा,चेयरमैन बैंक,हरियाणा सरकार व अन्य।

आगरा-उ.प्र.। ताज महोत्सव 2025 में ब्रह्माकुमारीज़ आर्ट गैलरी म्यूज़ियम की ओर से लगाये स्टॉल में आये आगंतुकों को राजयोग, शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य और आत्मा व परमात्मा का परिचय दिया गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. माला, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. अजीत, ब्र.कु. रामदास तथा अन्य।

बरनाला-पंजाब। शिवरात्रि के अवसर पर जन-जन को शिव संदेश देने हेतु निकाली दिव्य शोभा यात्रा में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बृज बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मेयर शैलेन्द्र रावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

ऊपर से नीचे

1. हर एक सदा संगठन में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो ..... का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढ़ाते हैं तो सफलता ही सफलता है।(3)
2. जब स्नेह में समा जाते हो तो कोई भी परिस्थिति सहज ..... करते हो।(4)
3. समय प्रमाण सन शोज़ ..... का पार्ट ड्रामा की नूँध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह!(3)
7. बाप के समान मास्टर मुक्तिदाता बन विश्व की आत्माओं को मुक्ति दिलाने वाले ऐसे सर्व श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और .....।(3)
8. सेवा करना अर्थात् समीप आने का फल खाना। सेवा का चांस लेना अर्थात् ..... जमा करना।(2)
9. आज के दिन बाप ने बच्चों को विशेष ..... के सामने प्रत्यक्ष किया। बाप करावनहार बने और बच्चों को करनहार बनाया।(2)
10. स्नेह छत्रछाया है, जिस छत्रछाया के अन्दर कोई माया की परछाई भी नहीं पड़ सकती। सहज ..... बन जाते हो।(4)
11. ऐसे नहीं कि सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी ..... में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो।(2)
13. बापदादा सभी बच्चों से यही चाहते हैं कि बाप के प्यार का सबूत ..... बनने का दिखाओ। सदा संकल्प में समर्थ हो, अब व्यर्थ के समाप्ति समारोह मनाओ।(3)
16. यह साइंस के साधन आपको बेहद की ..... करने में बहुत साथ देंगे और सहज ..... करायेंगे।(2)
18. सेवा का चांस लेना अर्थात् पुण्य जमा करना। दुआयें जमा करना। तो सभी सेवाधारियों ने अपना पुण्य का ..... जमा किया।(2)

अव्यक्त मुरली 18-01-2002 (पहेली-14)2024 -25

13/24- पहेली का उत्तर

(अव्यक्त मुरली 31-12-2001)

ऊपर से नीचे: 1. सतोप्रधान, 2. ताज, 3. वस्त्र, 4. खुश, 7. मधुबन, 8. माता, 10. विज्ञान, 12. वीर, 14. जीत, 15. बात, 16. मालिश, 17. निश्चय, 18. स्थूल, 19. साइंस, 20. दिल। **बायें से दायें:** 1. सफलता, 3. वर्ष, 4. खुशी, 5. जोश, 6. प्रमाण, 9. मधुर, 11. नवीनता, 14. जीवन, 16. मास, 17. निश्चिंत, 20. दिलखुश, 21.कमाल, 22. पास।

बायें से दायें

1. वर्तमान समय स्नेह की ..... में सबको पिरोना, यही विशेष आत्माओं का कार्य है और इससे ही, स्नेह संस्कारों को परिवर्तन भी करा सकता है।(2)
2. आप ..... का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं।(3)
3. जैसे संकल्प शक्ति ..... है, ऐसे ही आपकी रचना डबल फारेनर्स ..... पुरूषार्थ और ..... प्रालब्ध अनुभव करने वाले हैं।(2)
4. मनसा में निराकारी, वाचा में निरंहकारी, ... में निर्विकारी बनो।(3)
5. बापदादा कहते है कि सदा स्नेह के ..... में समाये रहो। स्नेह छत्रछाया है, जिस छत्रछाया के अन्दर काई माया की परछाई भी नहीं पड़ सकती।(3)
6. यह स्नेह हर बच्चे के इस ..... का वरदान है। परमात्म स्नेह ने ही आप सबको नई ..... दी है।(3)
9. एक दो के ..... को भी सम्मान देते हुए आगे बढ़ते हैं तो सफलता ही सफलता है।(3)
12. निराकारी आत्म स्थिति से निराकारी बाप स्वतः ही ..... आता है। (2)
13. हर एक बच्चे को स्नेह की शक्ति ने ही बाप का बनाया। यह स्नेह की शक्ति सब ..... कर देती है।(2)
14. अब तक अपने को ही मुक्त करने में ..... हैं क्या? विश्व की आत्माओं को बेहद स्वरूप से मास्टर मुक्तिदाता बनने से स्वयं की छोटी-छोटी बातों से स्वतः ही मुक्त हो जायेंगे।(2)
15. ब्रह्मा ने भी नहीं समझा, जा रहा हूँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ..... की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ..... वाह!(2)
16. शक्तियां, समान बाप? शक्ति ..... हो। शक्तियों की शक्ति मायाजीत बनाने वाली है।(2)
17. बापदादा आज एक बात गुल्ज़ार बच्ची को कह रहे थे, विशेष मुबारक दे रहे थे कि ब्रह्मा ..... की सेवा जैसे इस रथ ने भी 33 वर्ष पूरे किये।(2)
19. सदा संकल्प में समर्थ हो, अब ..... के समाप्ति समारोह मनाओ क्योंकि ..... समर्थ बनने नहीं देंगे।(2)
20. आत्मायें आप समर्थ आत्माओं को पुकार रही हैं- हे ..... के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता, हमें मुक्ति दो।(5)